॥ श्रीहरिः ॥

125

रंगीन बाल पोथी

शिशु पाठ

पहला भाग

गीताप्रेस, गोरखपुर

नम्र निवेदन

'शिशु पाठ' का यह प्रथम भाग है। दूसरे भागमें संयुक्त अक्षरोंके पाठ हैं। जहाँ वर्षभरमें दो कक्षाएँ हों वहाँ पहली कक्षाके लिये पहला और दूसरी कक्षाके लिये दूसरा भाग पाठ्यक्रममें रखना चाहिये और जहाँ पूरे वर्षतक एक ही कक्षा हो वहाँ दोनों भाग क्रमशः साथ रखने चाहिये।

गीताप्रेसका उद्देश्य है—बालकोंके लिये सरल, आदर्श सदाचारयुक्त सस्ती पुस्तकोंका प्रचार, जिससे पढ़ाईका खर्च घटे और सद्भावोंका प्रसार हो। ये पुस्तकें आधुनिक शिक्षाक्षेत्रके अनुभवी तथा ऊँचे विद्वानोंके सहयोग-सम्मतिके अनुसार उन्हींकी देख-रेखमें लिखी गयी हैं। इससे इनकी उपयोगितामें संदेह नहीं है। हमारा नम्र निवेदन है कि जनता और भारतके सभी प्रान्तोंके शिक्षाधिकारी महानुभाव अपने-अपने क्षेत्रमें इन्हें अपनाकर प्रचारकार्यमें हमारी सहायता करें एवं त्रुटियों-भूलोंको बताकर तथा उचित आवश्यक नये सुझाव देकर हमें अनुगृहीत करें।

विनीत—प्रकाशक

अनार
अ
अमरूद
आम
आ
आग
इमली
इ
इलायची
ईख
ई
ईश्वर
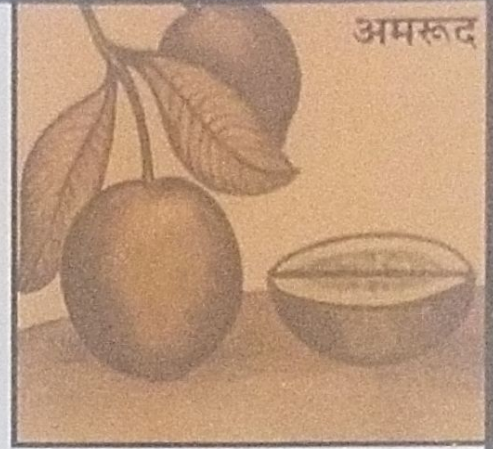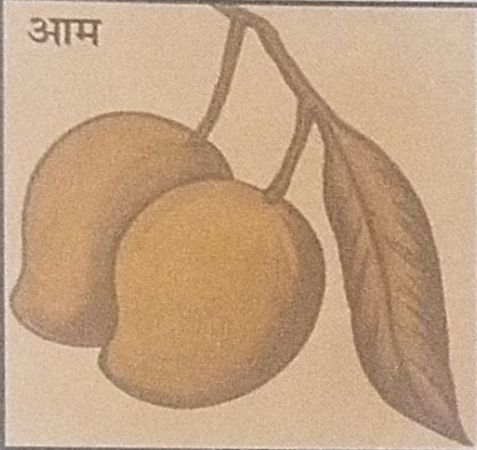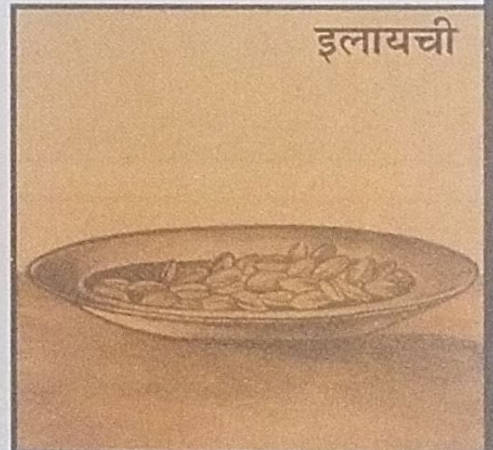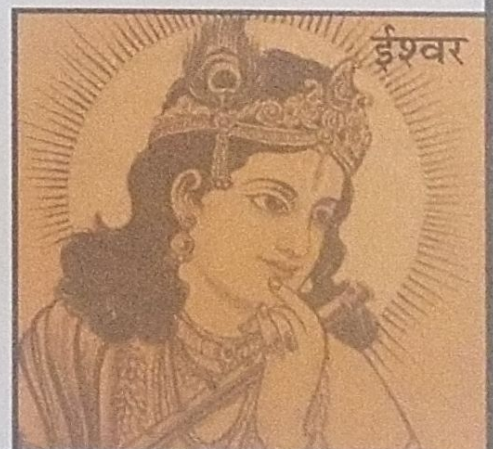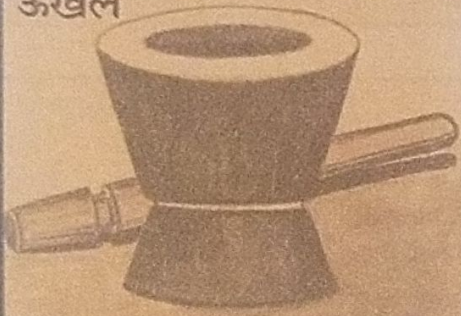
उड़नखटोला
उमा
उ
ऊखल
ऊन
ऊ
ऋषि
ऋक्ष
ऋ
एक
एकतारा
ए
ऐनक
ऐरावत
ऐ
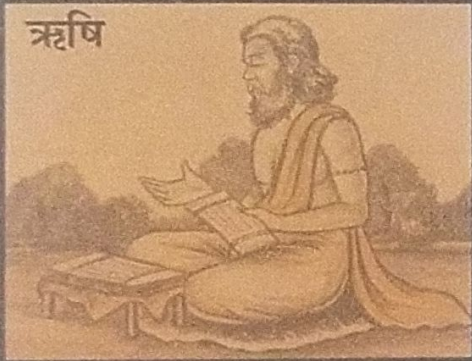
ओला
ओ
ओढ़नी
औरत
औ
औषध
अंगूर
अं
अंजीर
अःहह
अः
अःहह

कमल
कलश
क
खरबूजा
खजूर
ख
गऊ
गणेश
ग
घड़ी
घर
घ
ङ
ङ
ङ
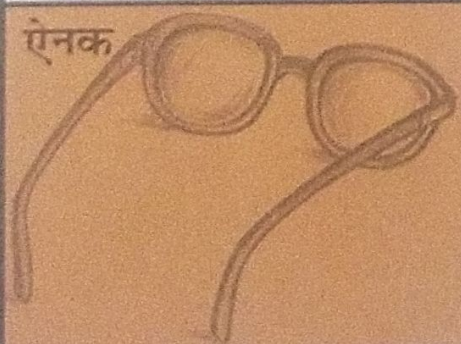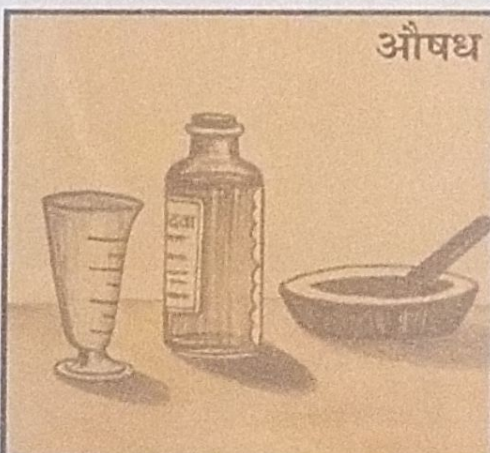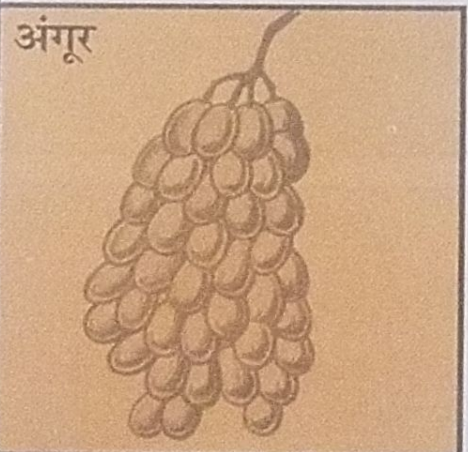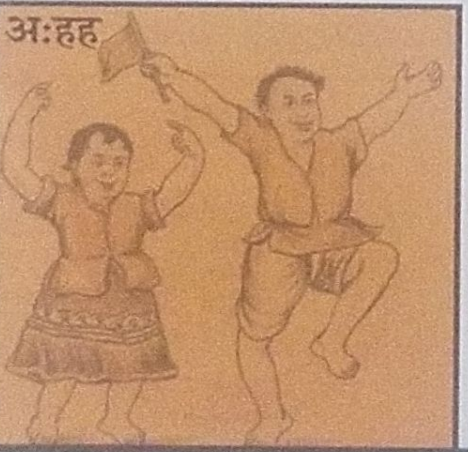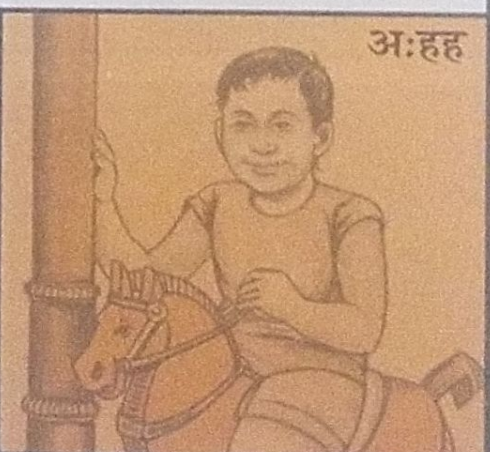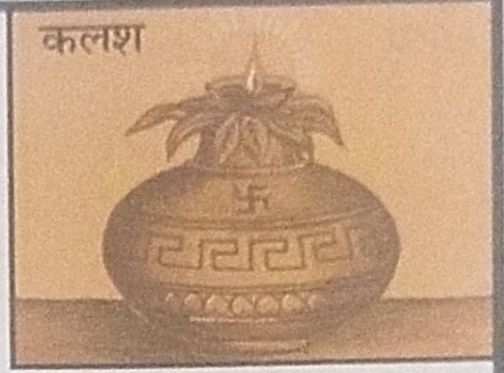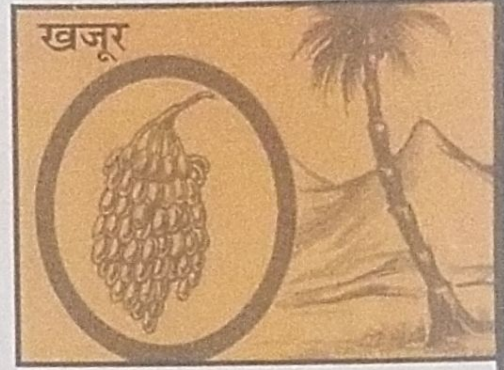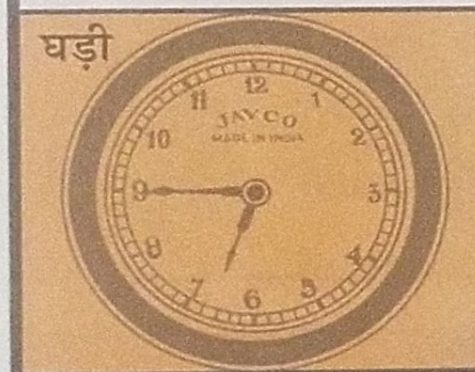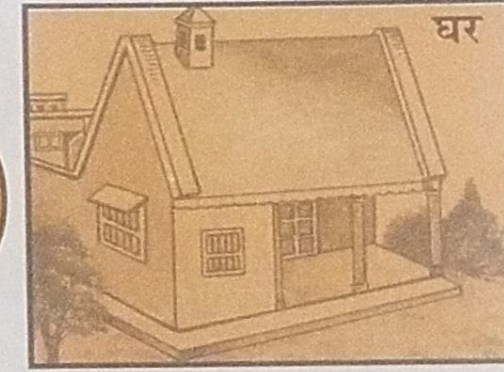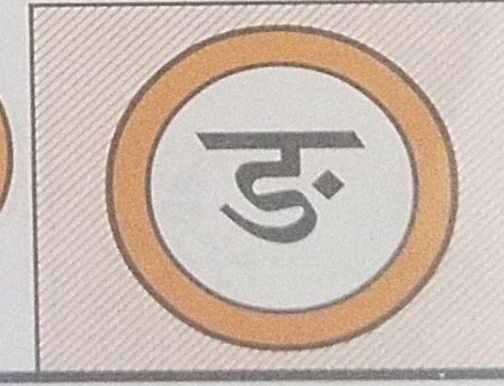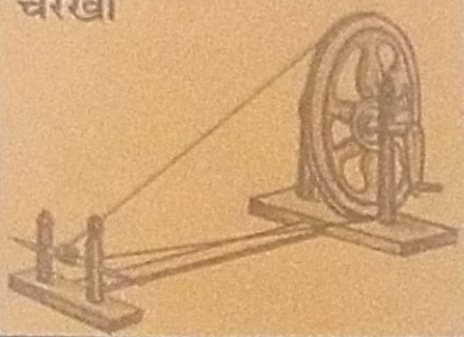
चरखा
च
चम्मच
छाता
छ
छड़ी
जहाज
ज
जलेबी
झज्झर
झ
झरना
ञ
ञ
ञ
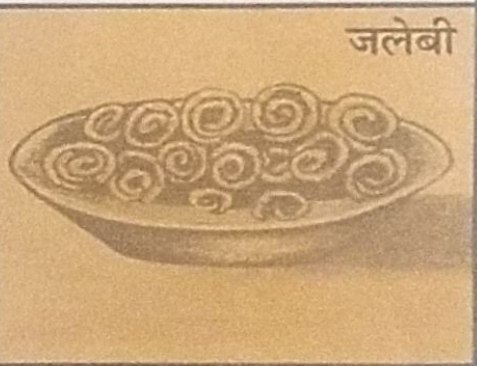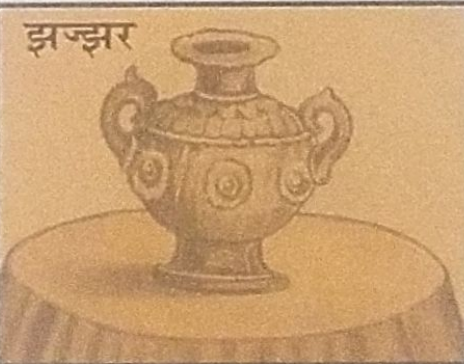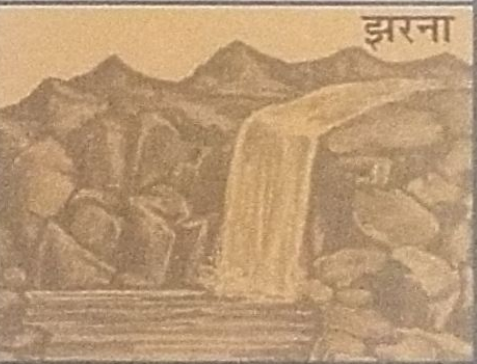
टमटम
ट
टमाटर
ठठेरा
ठ
ठग
डलिया
ड
डमरू
ढकना
ढ
ढप
ण
ण
ण
६

तराजू
त
तकिया
थन
थ
थम्भ
दवात
द
दरजी
धनुष
ध
धनवान
नगाड़ा
न
नल
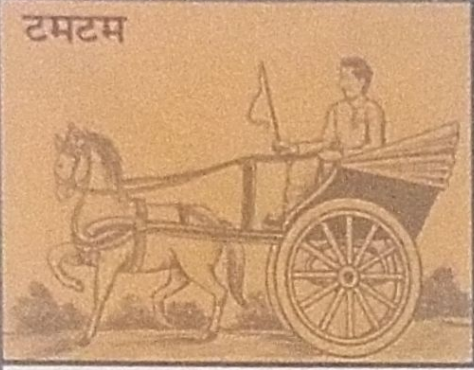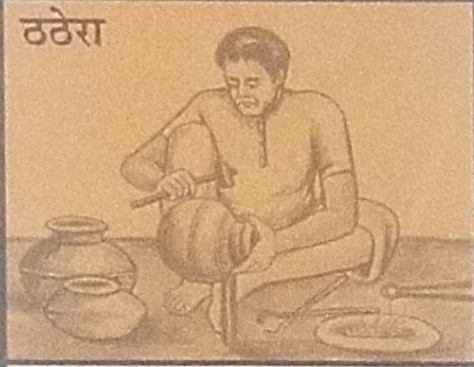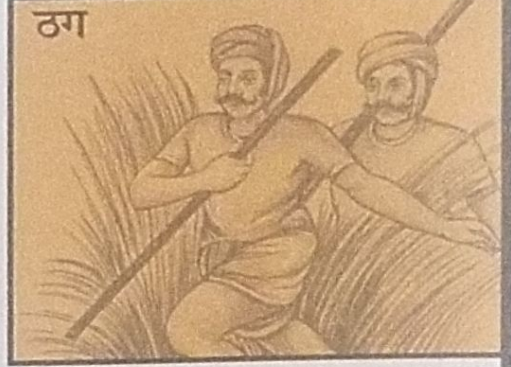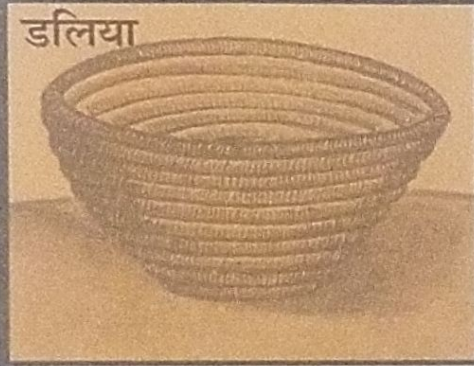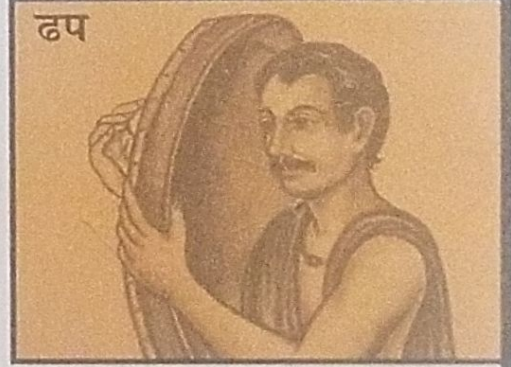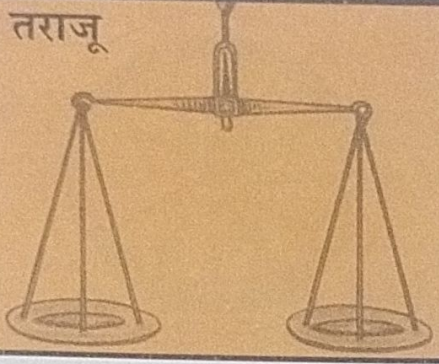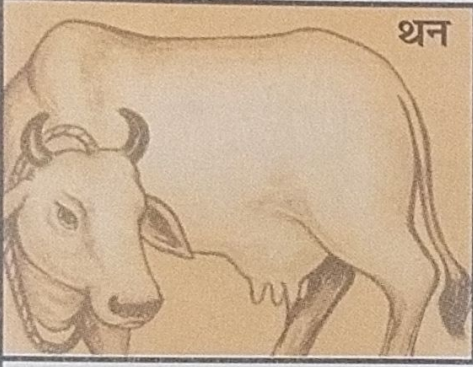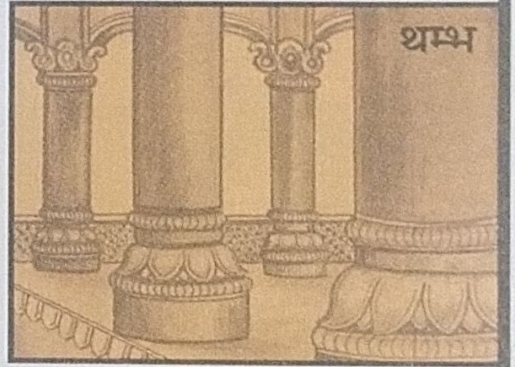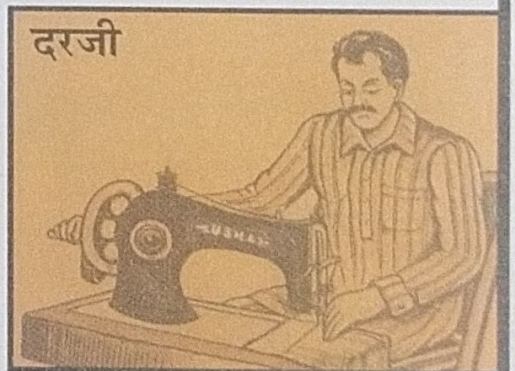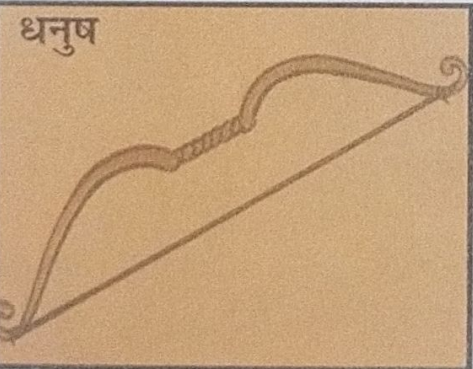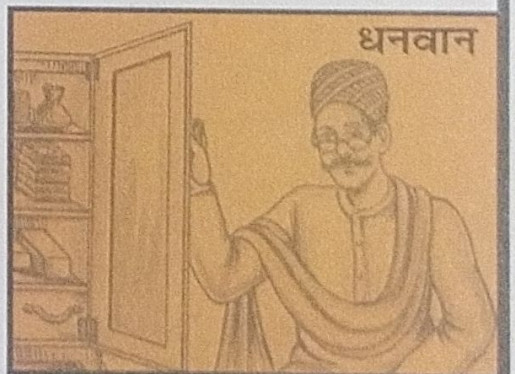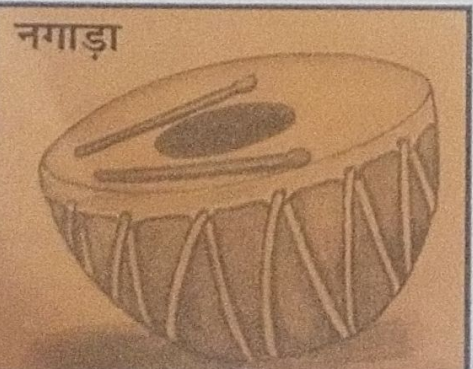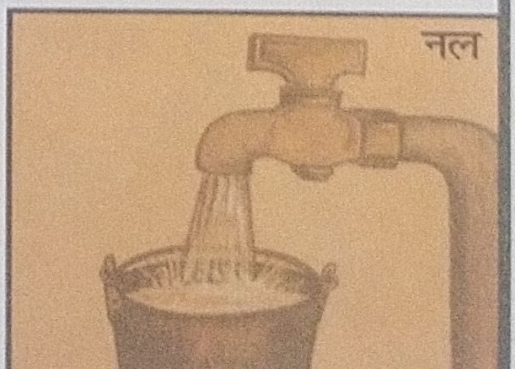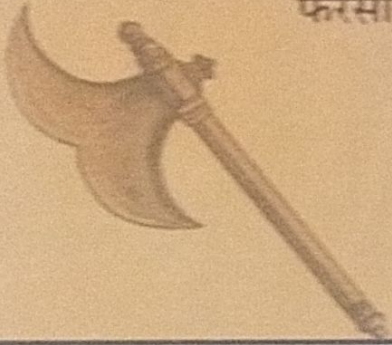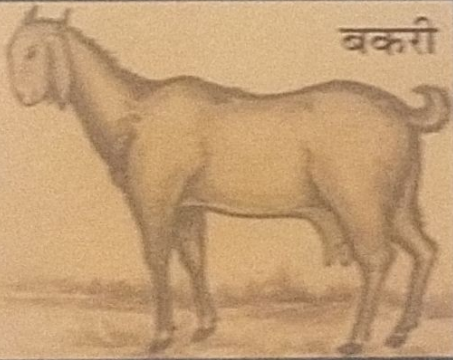
पतंग
प
पहिया
फरसा
फ
फल
बकरी
ब
बछिया
भड़भूजा
भ
भगत
महावत
म
महादेव
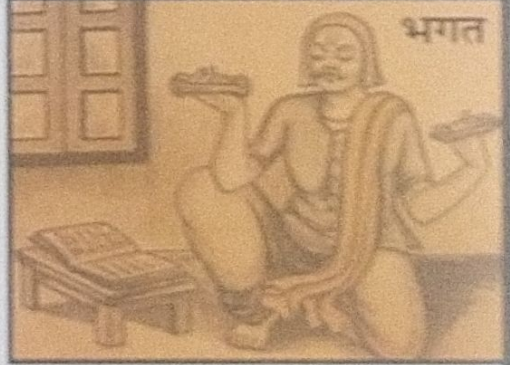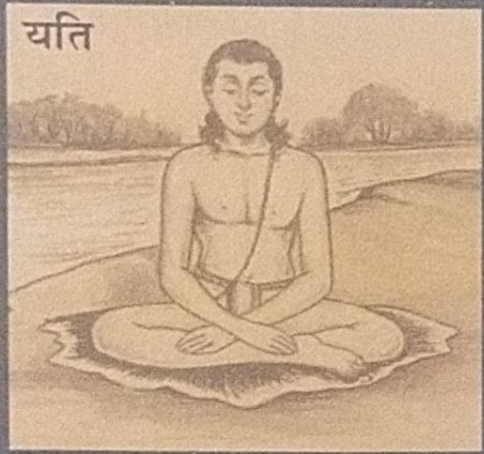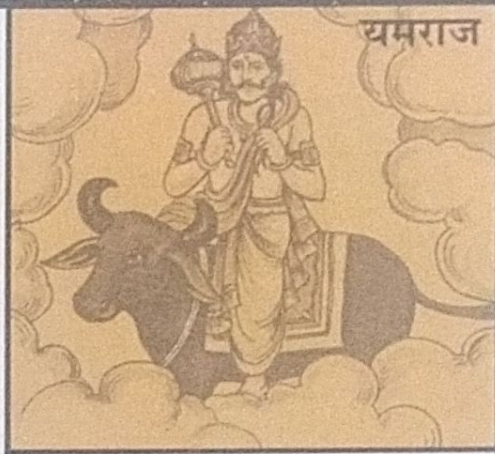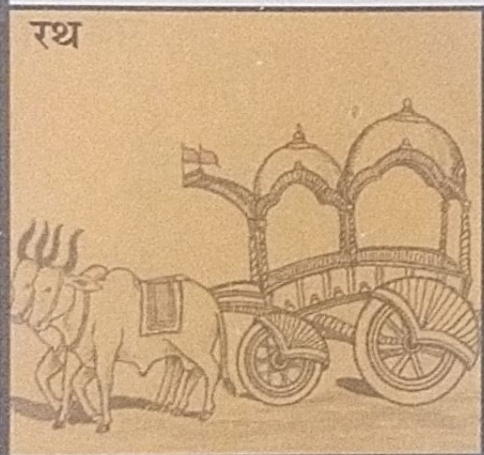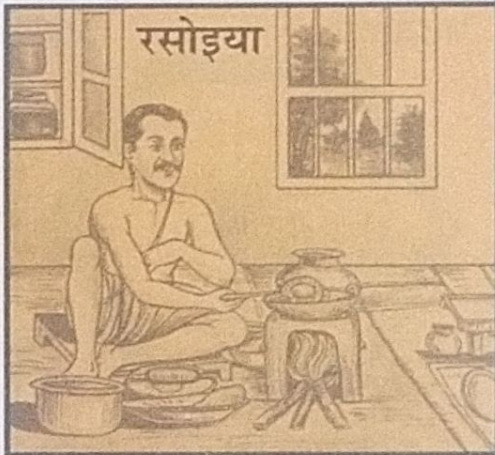
यति
य
यमराज
रथ
र
रसोइया
लड़की
ल
लक्ष्मण
वन
व
वनमाला
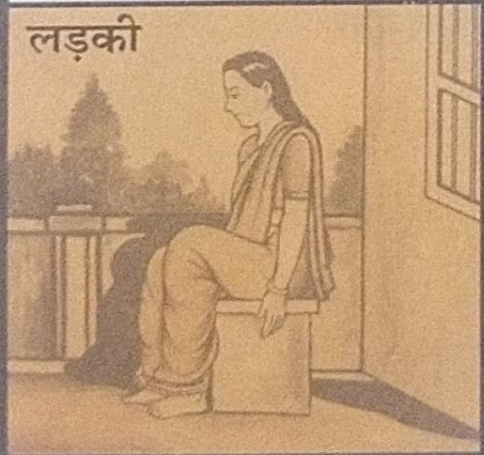
शरीफा
शबरी
श
षटकोण
षडानन
ष
सरौता
सरस्वती
स
हरिण
हनुमान
ह
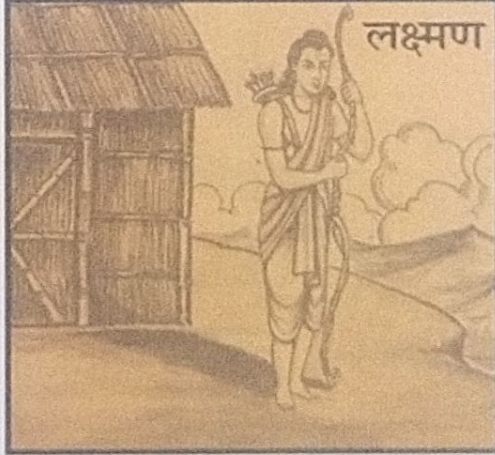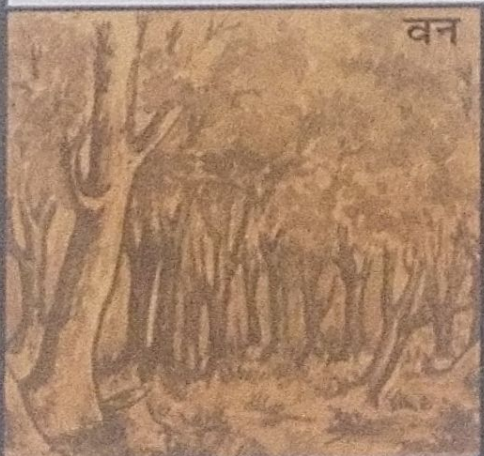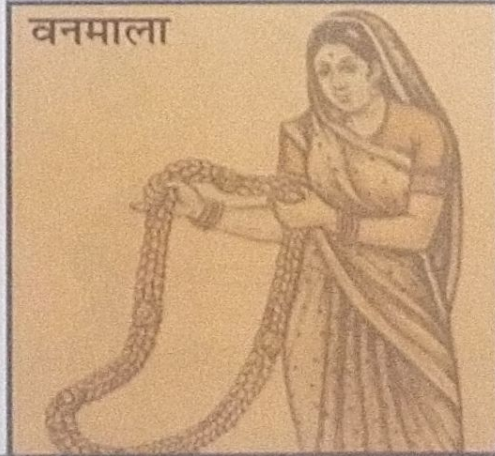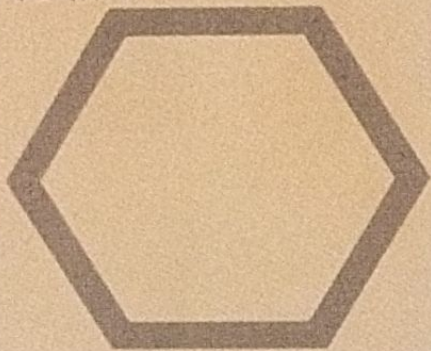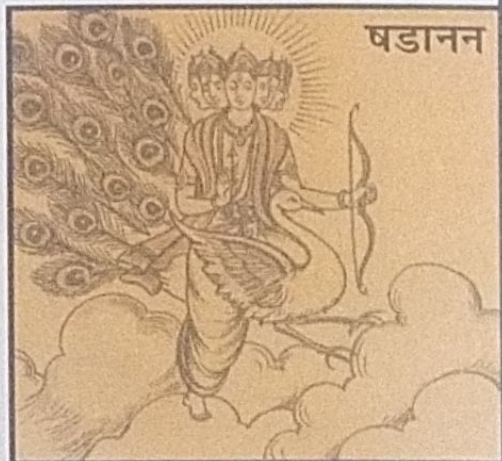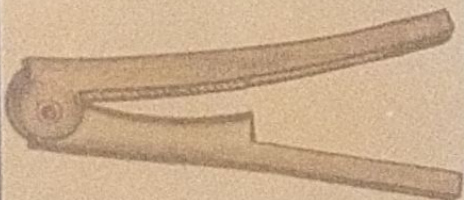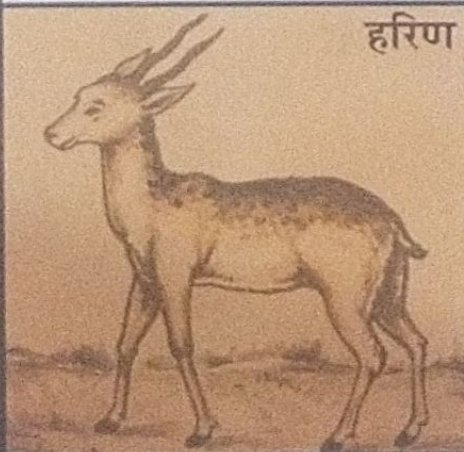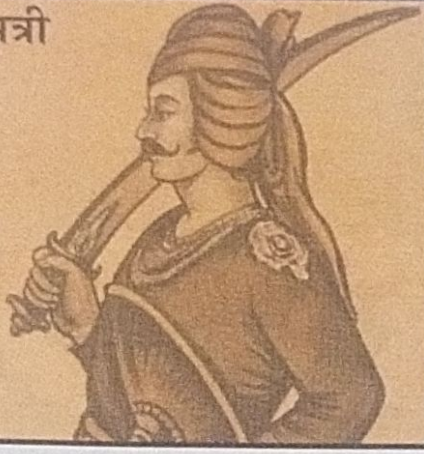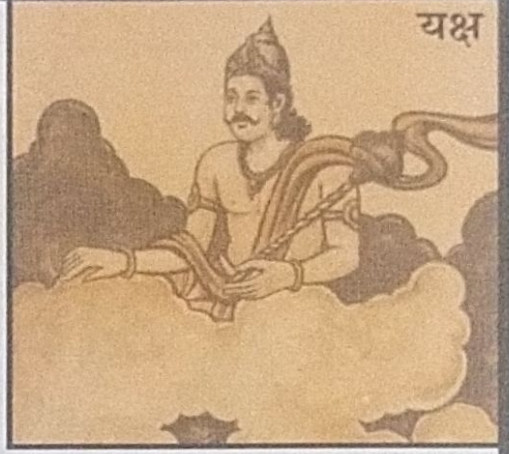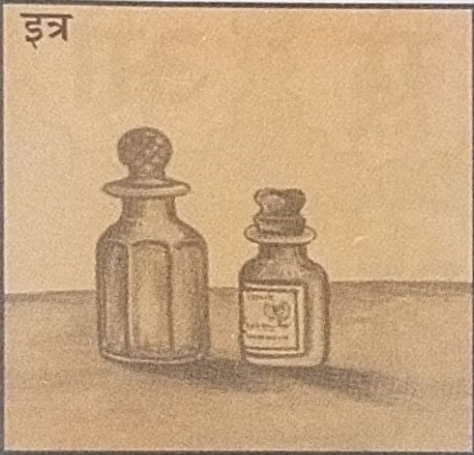
क्षत्री
क्ष
यक्ष
इत्र
त्र
पत्र
15
गीताप्रेस
गोरखपुर
273005
ज्ञानेश्वर
ज्ञ
यज्ञ
१ २ ३ ४ ५
६ ७ ८ ९ ०
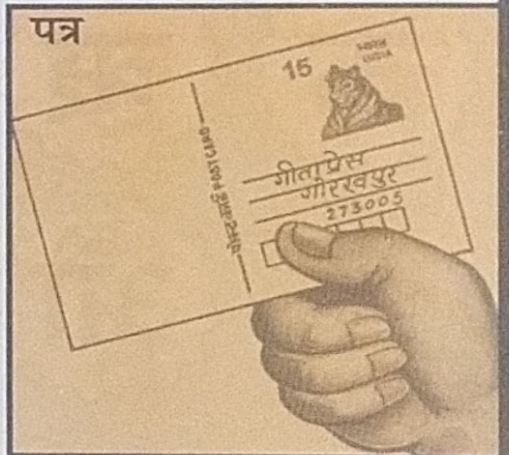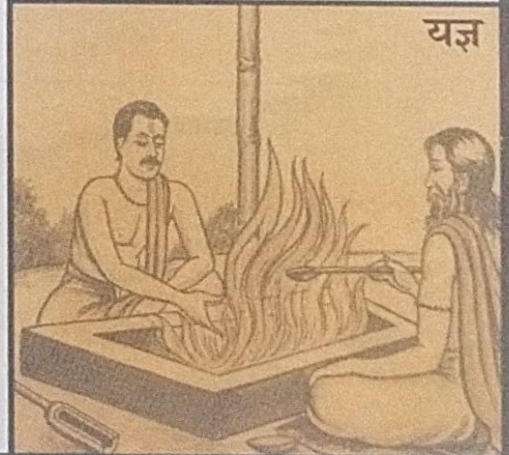
स्वर
अ आ इ ई उ
ऊ ऋ ए ऐ ओ
औ अं अः
स्वरोंकी पहचान
उ ऋ ओ ए आ
ई अं इ ऊ अ
औ ऐ अः

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	

व्यंजनोंकी पहचान

स	प	क	ल	ध	ग	ट
ह	ण	ख	य	ब	र	घ
थ	ठ	त	श	न	च	झ
ड	द	फ	व	ङ	छ	ष
	भ	ज	ढ	म	ञ	

दो प्रकारसे बननेवाले कुछ अक्षर

अ	अ
झ	झ
ण	ण
ल	ल
श	श

बनावटमें मिलते-जुलते कुछ अक्षर

र व ख स   ट ठ ढ   प ष फ   य थ

ड ङ ह   म भ झ   ज ञ   ध घ

व ब

नीचे बिन्दुवाले अक्षर

ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन

क्ष त्र ज्ञ

व्यंजनोंके साथ जुड़नेवाले स्वरोंके चिह्न—

स्वर —	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	
चिह्न —		ा	ि	ी	ु	ू	
स्वर —	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
चिह्न —	ृ	े	ै	ो	ौ	ं	ः

स्वर-मिश्रित व्यंजन

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः

ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः
ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ णं णः
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः
प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः

पाठ १

फल	रथ	घर
झट	पढ़	चख
सच	हल	कर
नल	मत	डर
जल	पर	बस
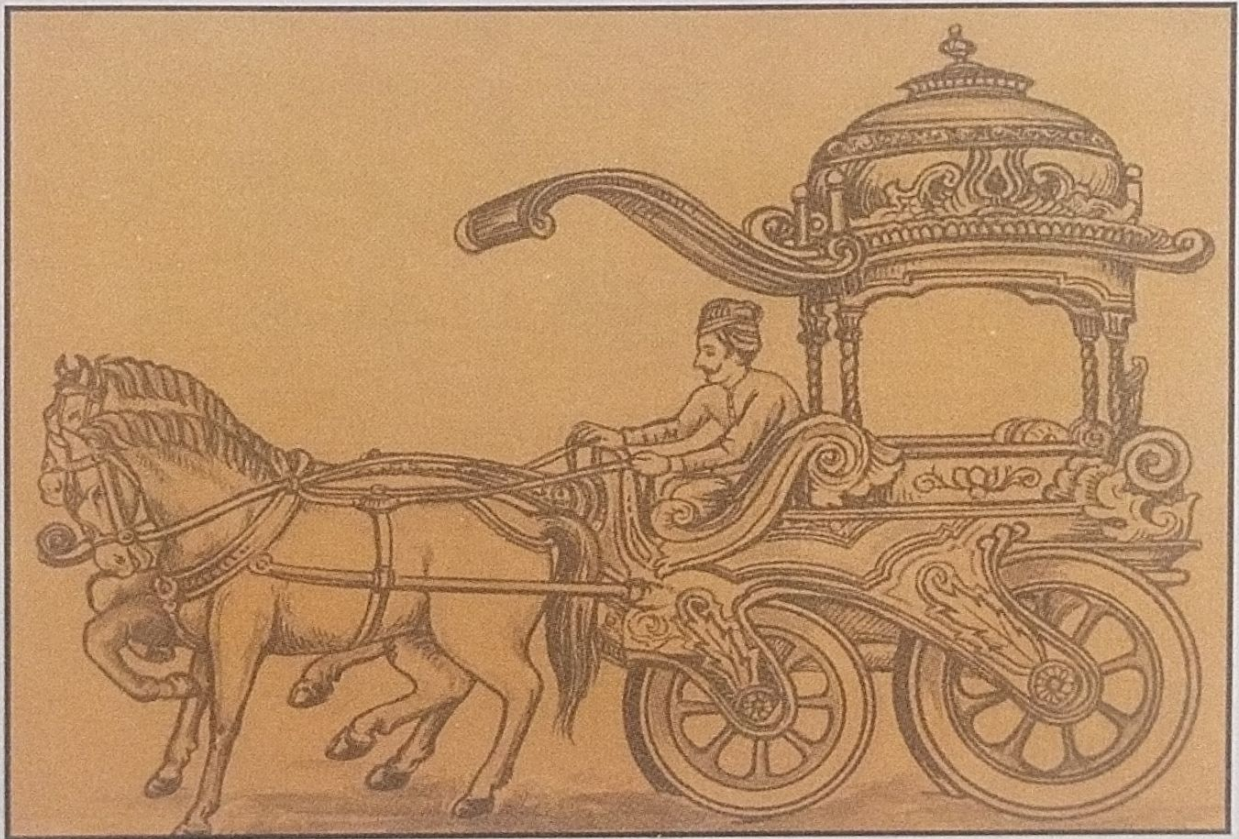
सच कह। डर मत। हर भज। फल चख। हठ मत कर। झटपट पढ़। रथपर चढ़। अब बस कर।

पाठ २

कलश	भजन	खरल
महल	इधर	चरण
लखन	टहल	नहर
बतख	शहद	पलक
उधर	मदन	झगड़
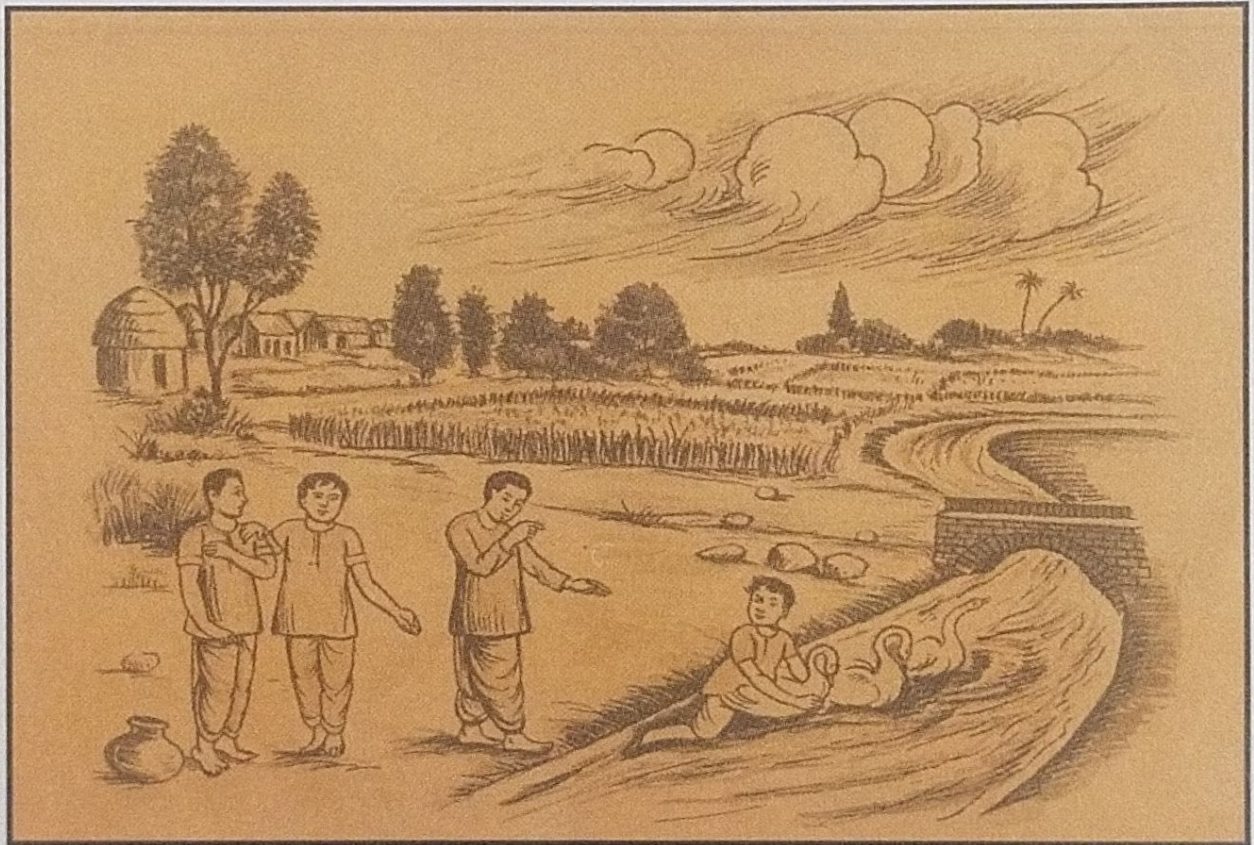
लखन उधर चल। नहरपर टहल। बतख मत पकड़। कलश भर। लड़-झगड़ मत। मदन शहद चख। यह भजन पढ़।

पाठ ३

परवल	कसरत	बरगद
टमटम	सरपट	नटखट
बरतन	अजगर	दशरथ
शरबत	उबटन	पनघट
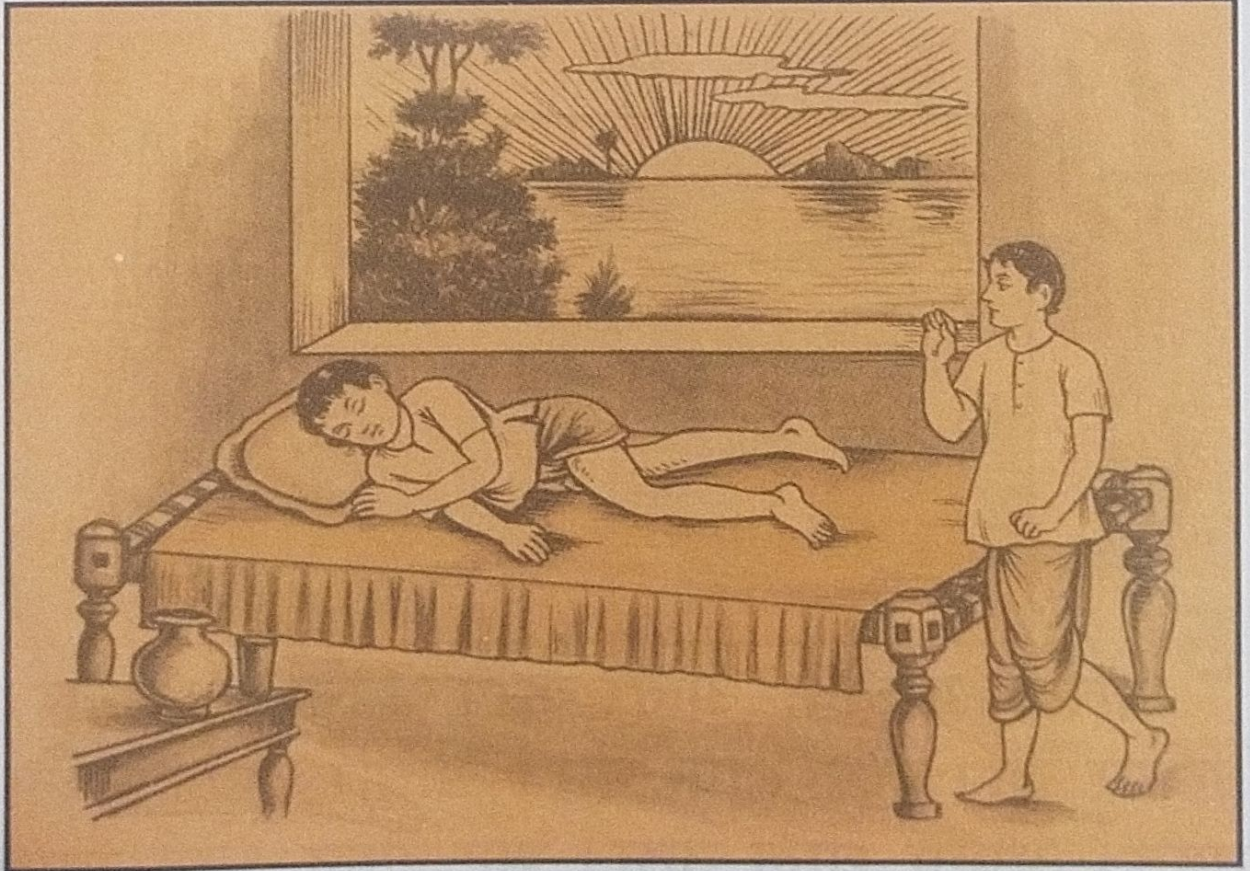
अब करवट मत बदल। दशरथ झटपट उठ। कसरत कर। बरगदतक सरपट चल। बरतन पनघटपर रख। तब जल भर। बदनपर उबटन मल। टमटमपर चढ़कर घर चल। जय हर हर।

पाठ ४

'आ' की मात्रा

आ=ा

क+आ=क+ा=का

ड+आ=ड+ा=डा

छ+आ=छ+ा=छा

ध+आ=ध+ा=धा

राम	नाम	काम	हार	माला
धान	बाजा	गाना	दाना	तारा
छाता	पान	डाल	भात	थाल
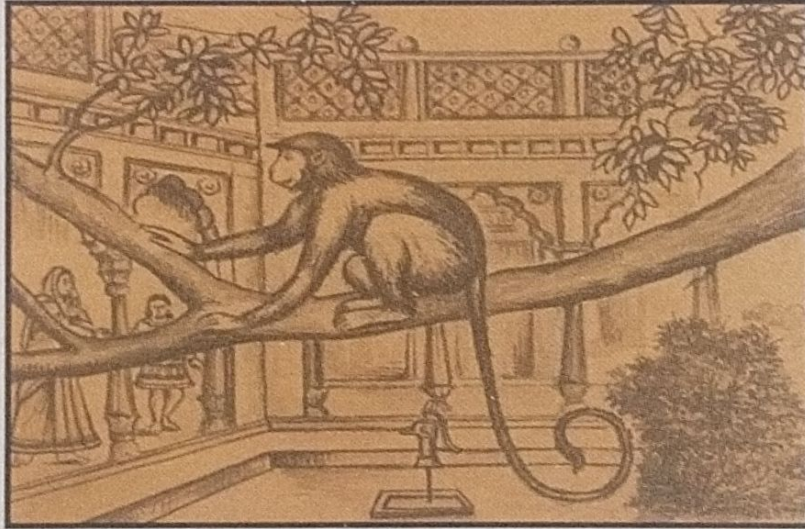
शारदा, माताका आदर कर। अपना हार उतार। नलपर जा। हाथ साफ कर। आकर लाल माला पहन। अपना थाल उठा। झट दाल-भात खा। डालपर काला बानर आया।

जा, बाबाका छाता ला। आकाशपर बादल छा गया। टपटप कर जल बरस पड़ा। अहा, चाचाका बाजा बजा। नानक गाना गाकर नाच उठा।

पाठ ५

'इ' की मात्रा

इ=ि

ख+इ=ख+ि=खि	ध+इ=ध+ि=धि

च+इ=च+ि=चि	ब+इ=ब+ि=बि

बछिया डलिया गिलास टिकिया
धनिया चिड़िया हिरन सियार
बिलाव तिलक सिर किवाड़

पिता

दिन

शिला
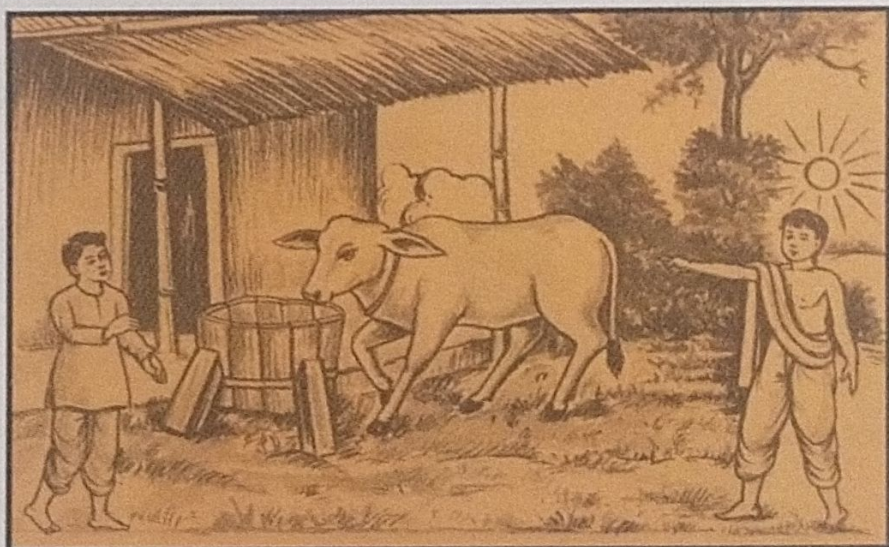
दिन निकल आया। कमल खिल गया। डलियाका साग हिरन खा गया। बछिया इधर ला। हरा-हरा चारा खिला। सिरपर तिलक कर। भगवानका भजन कर।

किवाड़पर न चढ़। चिड़िया मत पकड़। शिलापर गिर जायगा। माता-पिताका कहना मान। इस किताबपर अपना नाम लिख। गिलासका चित्र बना।

पाठ ६

'ई' की मात्रा

ई=ी

ग+ई=ग+ी=गी

ज+ई=ज+ी=जी

प+ई=प+ी=पी

स+ई=स+ी=सी

खिड़की तकली चरखी गीत बीज

जीभ वीणा फीता शीशा मीठा

पपीता सीता ककड़ी तीर नीम
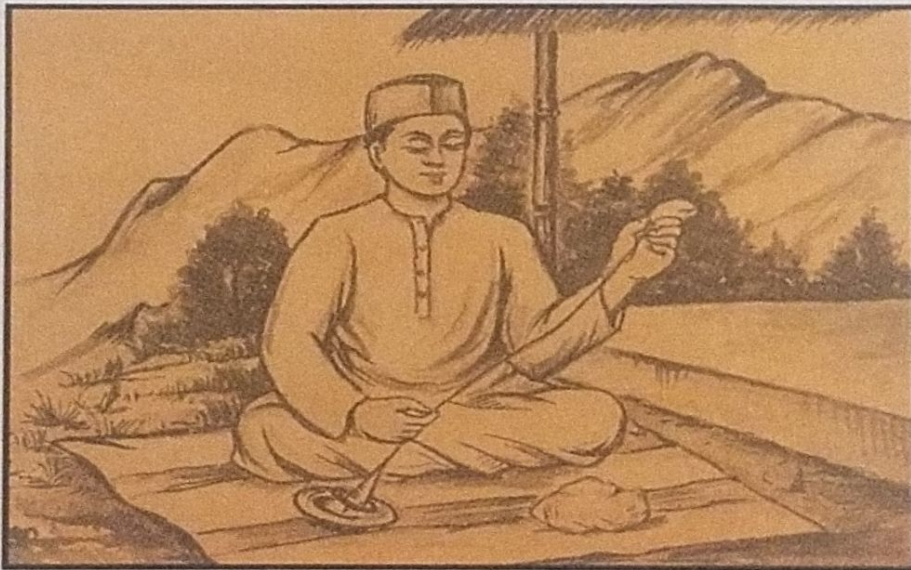
तकली चला। कपास ठीक कर। महीन-महीन तार निकाल। धागा चरखीपर चढ़ा। नीला-पीला फीता बना। गरीबकी सहायता कर।

काशी अपनी वीणा बजा। भगवानकी लीला गा। जीभ न निकाल। पपीता खा। फिर बीज उठा कर बाहर डाल। अहा, ककड़ी बकरी खा गयी।

पाठ ७

'उ' की मात्रा

उ= ु

ज+उ=ज+ु=जु

त+उ=त+ु=तु

ध+उ=ध+ु=धु

र+उ=र+ु=रु

यमुना घुटना झुकना कुटिया रुपया

मथुरा तुलसी खुरपा सुदामा गुलाब

पुल बुलबुल

टुकड़ा

फुलवाड़ी

धनुष
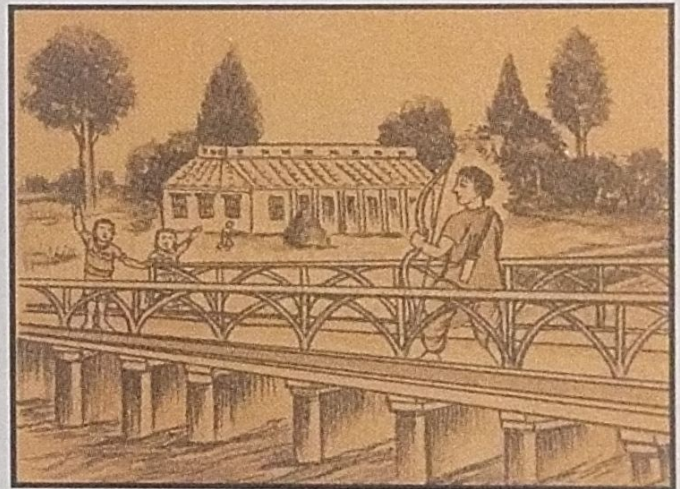
पुलपर चढ़। यमुना जाकर नहा आ। गुरुजीकी कुटियापर जा। घी-चीनी सीधा रख आ। धनुष-बाण चलाना सीख। किसीका नुकसान न कर। सबकी भलाई कर।

कल रविवार था। सुदामा गुरुजीकी कुटियापर फुलवाड़ी लगा गया। वह अपना खुरपा लाया था। वह घास खुरचता था तथा गुलाब-तुलसी लगाता था। वह बुलबुल उड़ गयी।

पाठ ८

'ऊ' की मात्रा

ऊ = ू

ज + ऊ = ज + ू = जू

ट + ऊ = ट + ू = टू

द + ऊ = द + ू = दू

र + ऊ = र + ू = रू

सूरज धूप दूध पूजा फूल झूला

मूली तराजू आलू रूमाल

कूड़ा झाड़ू

भूखा

बूढ़ा

चूहा
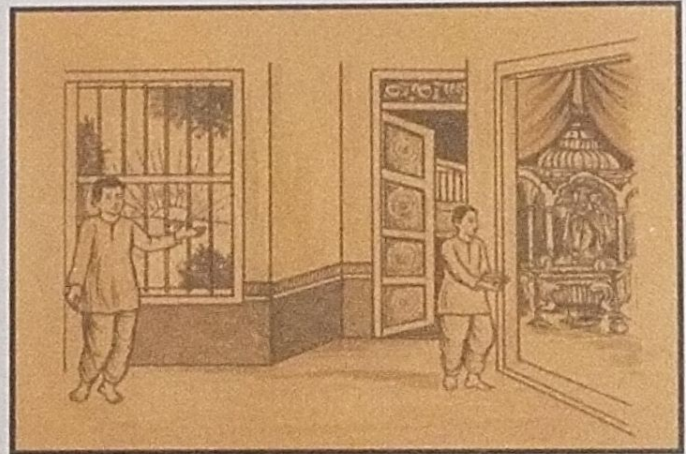
सूरज निकल आया। भगवानकी पूजा कर। नहलाकर नया कपड़ा पहना। धूप दिखा। फूलकी माला बनाकर चढ़ा। बाजा बजाकर आरती कर।

धूप चमचमा उठी। अब बाबूजीका कमरा साफ कर। झाड़ू लगा। कूड़ा उधर डाल। जूता बाहर रख।

भूखा न रह। मीठा आम चूस। गायका दूध पी। फिर रामूकी दूकान जा। मूली आलू अमरूद ला। खा-पीकर झूला झूल।

पाठ ९

'ए' की मात्रा

ए= े

ज + ए = ज + े = जे

द + ए = द + े = दे

म + ए = म + े = मे

स + ए = स + े = से

केशव रमेश गणेश देखना भेजना

मेढक घेरा

शेर ढेला

सेम नेवला

खेत पेड़

लेटना बेर
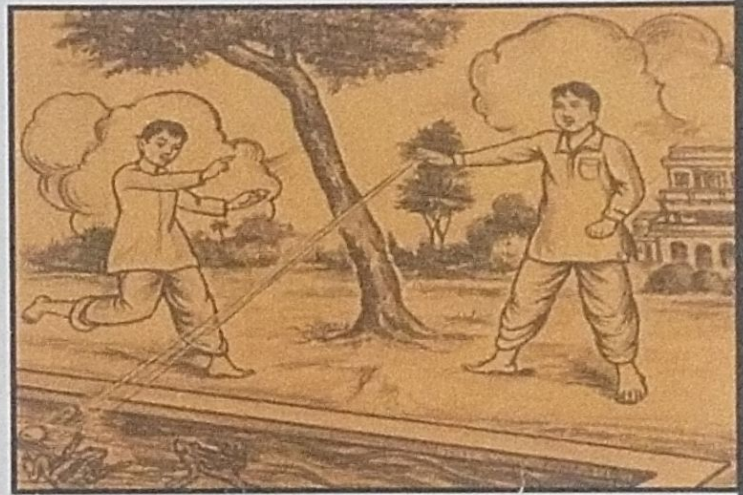
तालाबके किनारे केशवका खेत था। खूब मेह बरसा। तालाब पानीसे भर गया। उसके भीतर मेढक आ गये। एक दिन सब मेढक टर्र-टर्र करने लगे। केशवका मित्र रमेश किनारेपर खड़ा था। उसने एक मेढकपर ढेला मारा। केशवने यह देख लिया। उसने रमेशसे कहा—किसीपर ढेला कभी न मारना चाहिये। ढेला मारकर पाप न कर। तबसे रमेश सबपर दया करने लगा। वह सदा भले लड़केके साथ खेलता। केशवकी भली सीख पाकर वह अब सबकी सेवा करने लगा।

पाठ १०

'ऐ' की मात्रा

ए= ै

क+ऐ=क+ ै =कै

थ+ऐ=थ+ ै =थै

ब+ऐ=ब+ ै =बै

ह+ऐ=ह+ ै =है

कैलाश गैया भैया

सैर बैर तैरना

खपरैल बैठना

मैना फैलना

थैला पैसा
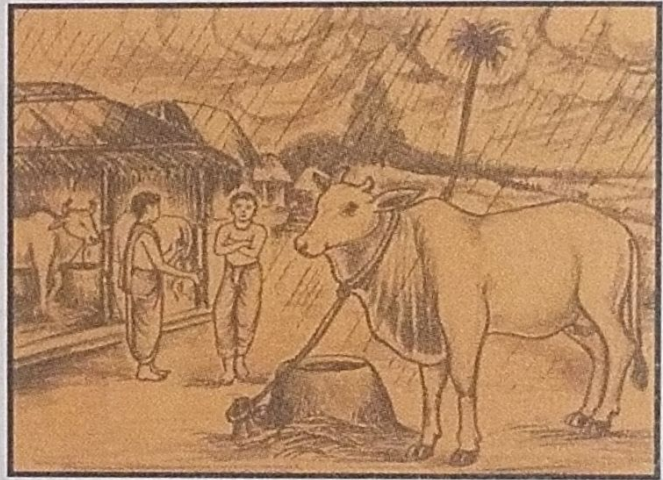
यह कैलाशकी गैया है। बड़ी सूधी है। कैलाशका भैया बैजनाथ इसका दूध पीता है। दूध पीकर यह सैर करने जाता है।

गैया सुबह बाहर जाती है। घूम-घूमकर घास चरती है। धूपके समय पेड़के नीचे पैर फैलाकर बैठ जाती है। घरके सामने खपरैलका मकान है। यह उसका रातका घर है। गैया हमारी माता है। वह सदा हमारा उपकार करती है। उसका बछड़ा बैल बनकर खेती करता है। खेतीसे अनाज मिलता है। अनाजसे हम सबका पेट भरता है।

थैला अनाजसे भर ले। किसीसे वैर न कर।

पाठ ११

'ओ' की मात्रा

ओ= ो

ग+ओ=ग+ो=गो

ड+ओ=ड+ो=डो

द+ओ=द+ो=दो

स+ओ=स+ो=सो

मोर कोयल तोता चोटी खोली रोटी

झोला टोकरी डोलची होली ढोल

घोड़ा

भोजन

धोती
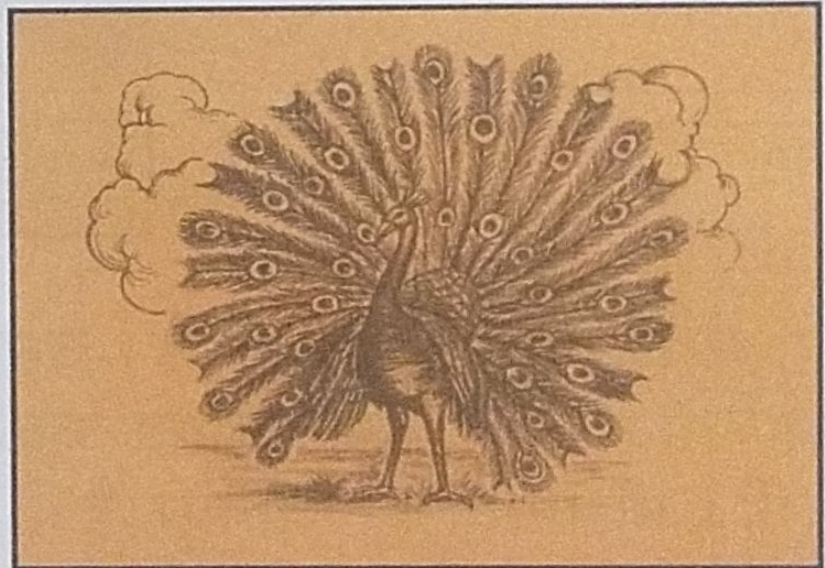
देखो, मोर नाच रहा है। मोरका पर बड़ा सुहावना होता है। होलीके दिन मोहनने मोरका एक पर ठाकुरजीके मुकुटपर लगाया था।

धीरे-धीरे चलो। शोर न मचाओ। मोरको खुश होकर नाचने दो। सबपर दया करना सीखो। सबकी सेवा करो। सबका आदर करो। गरीबको भोजन धोती दो।

पाठ १२

‘औ’ की मात्रा

औ= ौ

क+औ=क+ ौ=कौ

च+औ=च+ ौ=चौ

न+औ=न+ ौ=नौ

ल+औ=ल+ ौ=लौ

नौका गौरी

दौड़ना पौधा

सरौता सौदा

कचौड़ी मौसी

पकौड़ी बिछौना

जौनपुर खिलौना
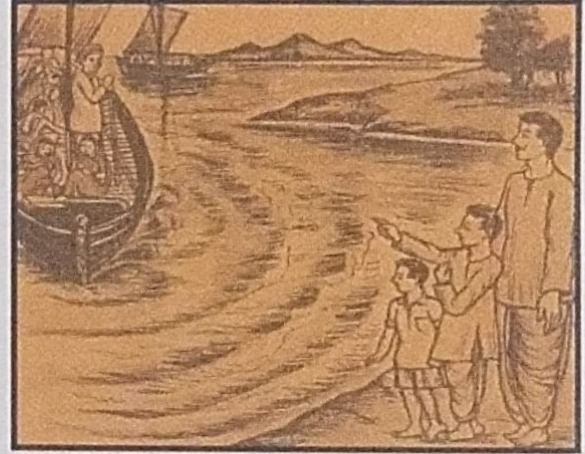
भैया नौका आ रही है। उससे हमारी मौसी आयेगी। मौसी हम सबको एक-एक खिलौना देगी। मौसीका घर जौनपुर है।

नौकापर एक बड़ी चौकी है। उसपर लाल बिछौना बिछा है। मौसी चौकीपर बैठी है। मौसीने हम सबको देख लिया। अहा, गौरी बहिन भी दिखायी देती है। उसको पकौड़ी और कचौड़ी खिलानी चाहिये। दौड़कर जा माँसे कह दे।

मौसीके साथ गोकुल चौधरी आया है। अरे, गुरुजी भी आ गये। उनकी भागवतकी बढ़िया कथा होगी। सबको सुनना चाहिये।

पाठ १३

*'अं' की मात्रा (अनुस्वार)**

अं=ं

ग+अं=ग+ं=गं | *द+अं=द+ं=दं*

च+अं=च+ं=चं | *र+अं=र+ं=रं*

अंगूर घंटा कंघा पंडितजी खंभा गेंद
खींचना फेंकना
नींद भोंकना
झोंपड़ी मैं पतंग
ओंकार वंशीधर
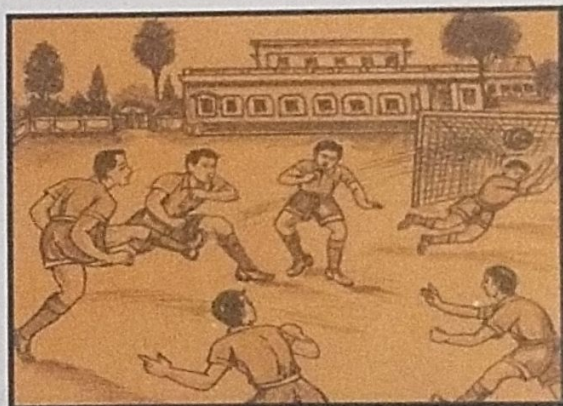
अभी पंडितजीके आनेमें आध घंटेकी देर है। घंटी उनके आनेके बाद बजेगी। ठंड लग रही है। आओ थोड़ी रामधुन करके फिर गेंद खेलें। ओंकारको तुम ले लो। वंशीधर हमारे साथ है। हम पतंग नहीं उड़ायेंगे।

इधर दो खंभे गड़े हुए हैं। उधर झोंपड़ीके पास मोहन खड़ा हो जायगा।

गेंद खेलनेसे बड़े लाभ हैं। ठंड कम लगती है। शरीर बलवान होता है। रातको नींद खूब आती है। समयपर गेंद खेलना चाहिये।

* अनुस्वारका प्रयोग प्रायः पंचमवर्णके स्थानमें और सिंह आदि शब्दोंमें दूसरी मात्राके साथ भी होता है। गेंद, खींचना, झोंपड़ी, नींद, मैं आदि शब्दोंमें चन्द्रबिन्दु

पाठ १४

चन्द्रबिन्दु
अँ= ँ

ब+अँ=ब+ ँ=बँ
च+अं=च+ं=चं

ह+अँ=ह+ ँ=हँ
र+अं=र+ं=रं

बाँसुरी गाँव
हँसना ऊँट
लँगड़ा माँगना
आँख दाँत टाँग
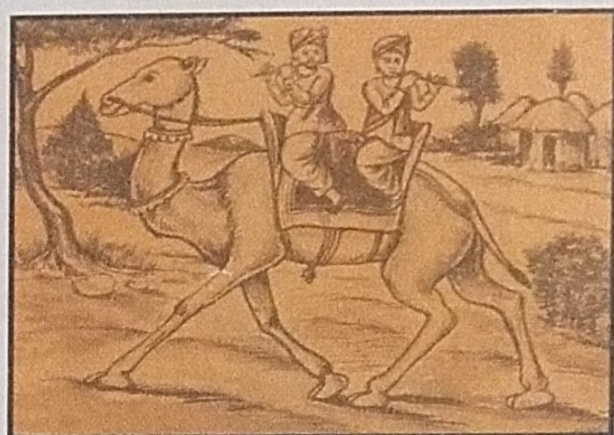
गोपालके पास बाँसकी दो बाँसुरी हैं। बाँसकी बाँसुरी मीठी बजती है। वह हमें साँवलियाकी याद दिलाती है। साँवलिया गोकुलमें बाँसुरीकी मीठी तान सुनाकर सबको मोह लेता था। गोपालका मामा गाँवमें रहता है। गोपाल जब गाँव जाता है तब ऊँटपर चढ़ता है। ऊँट बहुत ऊँचा जानवर है। उसके चार बड़ी-बड़ी टाँगें होती हैं। गोपाल उसकी पीठपर बाँसुरी बजाता है। गाँवके सब लोग हँसने लगते हैं।

वह लँगड़ा आदमी भी बाँसुरी बजाकर लोगोंको सुनाता था। लोग उसे खानेको देते थे।

(ँ) का प्रयोग होना चाहिये, परन्तु छपाईकी सुविधाकी दृष्टिसे अनुस्वार लगानेकी प्रथा हो गयी है, उसीके अनुसार इन शब्दोंमें अनुस्वार लगाया गया है।

पाठ १५

'अः' की मात्रा (विसर्ग)*

अः= ः

द+अः=द+ ः=दः

न+अः=न+ ः=नः

छः

पुनः

दुःख

सबेरे छः बजे उठना चाहिये। उठते ही भगवानको याद करना चाहिये। भगवानसे सबके भलेके लिये विनती करनी चाहिये। माता-पिताके पैर छूकर उनकी असीस लेनी चाहिये। फिर नहा-धोकर साफ धुली हुई धोती पहन कर भगवानका नाम लेना चाहिये। इसके बाद कोई दूसरा काम करना चाहिये। दिनभरमें किसीको भी दुःख न देकर तन मन धनसे पुनः-पुनः सेवा करके सबको सुख पहुँचाना चाहिये। अपनेको सबका सेवक और सबको भगवानका रूप समझना चाहिये तथा भगवानकी सेवा समझकर दुःखी लोगोंकी सहायता करनी चाहिये।

* विसर्ग समझानेमें अधिक जोर देनेकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि विसर्गयुक्त शब्दोंका प्रयोग संस्कृतमें ही होता है। यद्यपि 'अधःपतन' ऐसे शब्द हिन्दीमें चलते हैं, पर बालकोंको ऐसे शब्द विशेष आवश्यक नहीं हैं।

पाठ १६

'ऋ'=ृ की मात्रा *

क+ऋ=क+ृ=कृ
त+ऋ=त+ृ=तृ
न+ऋ=न+ृ=नृ
ह+ऋ=ह+ृ=हृ

मृग हृदय

पृथिवी तृण

वृक्ष अमृत

गृह घृत
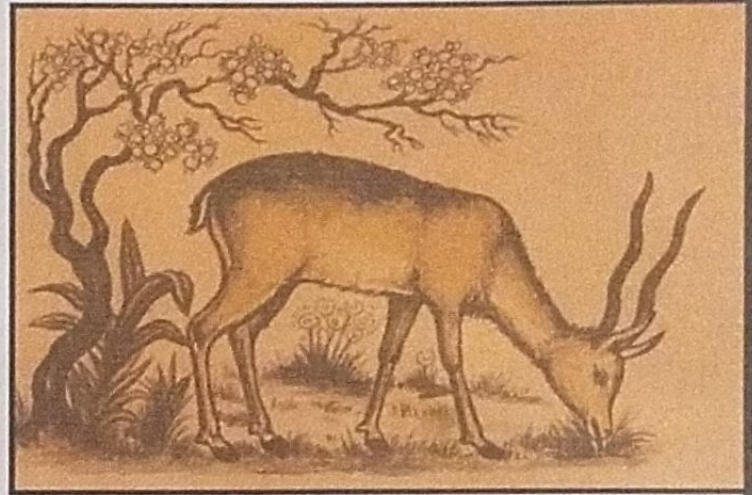
मृग तृण चर रहा है। इधर-उधर वृक्ष उगे हुए हैं। भगवान सब जीवोंके हृदयमें रहते हैं। वे सबके मनकी बात जानते हैं। उनको कोई धोखा नहीं दे सकता। उनकी कृपा सबपर समान है। वे सहज दयालु हैं।

गौका घृत अमृतके सदृश है। हमारा गृह पृथिवीपर बना है। पृथिवी हम सबकी माता है।

* यद्यपि क्रमके अनुसार 'ऋ' की मात्रा 'ऊ' के बाद आनी चाहिये थी, परन्तु एक तो 'ऋ' मात्रावाले शब्द कठिन हैं और दूसरे अ, आ, इ, ई आदिको जिस गतिके साथ बच्चे पढ़ते हैं, उस गतिमें कुछ रुकावट पड़ती है। इस कारण 'ऋ' को सबके अन्तमें रख दिया है।

गिनती एकसे सौतक

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

पहाड़ा एकसे दसतक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०
६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०
७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०
९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००